Ekxhl ikyu

1- lkfjp;%&

1. मुर्गीपालन रोजगार व आय का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन है जिसके द्वारा 1500से 2000तक कि अतिरिक्त आमदनी हो सकती है ।
2. अण्डे एवं मॉस की अच्छी नस्ल के माध्यम से थोडे समय मे लाभ कमाया जा सकता है ।
यह एक सस्ता व्यवसाय है, जिसमें लागत कम एवं लाभ अधिक होता हैं,। घर में बेकार साग सब्जी के पत्ते, छटा हुआ अनाज एवं घर में बचा हुआ भोजन आदि मुर्गीपालन के भोजन के रूप में काम आ जाता हैं ।
छोटे स्तर पर कुक्कुट उत्पादन के लिए उपयुक्त अधिक उत्पादन वाले चार प्रकार की जातीयों में (कैरी निर्भीक, कैरी श्यामा, उपकारी , हितकारी) को विकसित किया गया हैं । ये देश की विभिन्न जलवायु वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त हैं । इन पक्षियों को 50 प्रतिशत विदेशी मुर्गी एवं अन्य विषशेताओं को मिलाकर तैयार किया गया हैं

2- /;ku nus okyh ie[k ckrs %&

1. मुर्गे /मुर्गियों को चोरी, परजीवियों, मांसाहारी पशु—पक्षियों व खराब मौसम से बचना जरूरी है । इसके लिए समुचित आवास व्यवस्था साफ पानी एवं चारे के उपलब्धा अति आवश्यक हैं । उधम के लिए महत्वपूर्ण हैं, कि खर्चे एवं नुकसान को कम कर सही व्यवस्था के द्वारा अधिक लाभ प्राप्त किया जायें ।

e|xhZikyu dk egRo %&

निम्न से स्पष्ट नजर आता हैं :

1. खेती के हानिकारक कीट–पतंगों से रक्षा ।
2. कम खर्च की आवश्यकता हैं कम समय मे आमदनी ।
3. घर कि महिलाऍ एवं बच्चों भी इस कार्य को कर सकते हैं ।
4. मुर्गी के मल–मूत्र से बनी बिछावन की खाद कृषि के लिए वरदान हैं ।
5. घर के सदस्यों का बचे हुए समय का सदुपयोग होता हैं ।
6. परिवार के सदस्यों को प्रोटीनयुक्त सन्तुलि आहार उपलब्ध करवानें का उत्तम साधन ।
7. परिवार कि आय बढाने में सहयोग ।

3-mnHko esa {ks= ds fy, mi;qDr iztkfr;ka gS %&

1. असिल 2. कडनाथ 3. बूसरा 4. केरीब्रो 5. गिरिराजा क्रॉस 6. निर्भिक

मुर्गी पालन को उधम की तरह अपनानें के लिए महत्वपूर्ण ध्यान योग्य बातें है :–

आवास की व्यवस्था जिसे एवं परपक्षी चोरी से होने वाले नुकसान को कम किया जा सके ।

आवास को माध्यम से मौसम एवं अन्य करणों से होने वाली बिमारियों को भी कम किया जा सकता हैं ।

vkn'kZ vkokl O;oLFkk grq ekxZnf'kZdk %

Ik{kh	Tkxg QhV esa
1	1x1
5	3x3
10	10x2
50	5 x10
100	10x5 ¼2?kj½
200	10x5 ¼4?kj½

vkokl&

1- Nr & 	सीमेंट ,कंकरीट ,घास फूस या टेणों कि बनी हो सकती है। यह ऐसी कि परजीवी अन्दर ना आ सकें ।
2- txg fd fLFkfr 	जगह बाजार व मुख्य सडक के पास स्थित हो, वहॉ पानी, बिजली व सुरक्षा उपलब्ध हों और आसपास पानी इकट्ठा नही होना चाहिए ।
3- Hkou dh fn'kk& 	लम्बाई पूर्व पश्चिम दिशा में स्थित होनी चाहिए जिससे सभी को सुबह सुबह सूर्य की रोशनी अधिक मिल सके क्योकि मुर्गियॉ दोपहर की तुलना में सुबह की रोशनी को अधिक पंसद करती है।
4gok	हवा की समुचित व्यवस्था जिससे शुद्ध व ताजी हवा मिलती रहे। एवं द्वारा विसर्जित नमी अवाछित गैसे हवा के साथ बाहर निकल सकें। दीवारों की उचित उचाई (लगभग 5 फीट) होनी चाहिए दीवारों के उपर की तरफ तारों की जाली लगानी चाहिए।
5-rkieku 	कमरों के लिये अनुकुल तापमान 55–75 डिग्री F (12.8–23.8 डिग्री C) है। अधिक तापमान पर मुर्गीयों का खाना पीना उत्पादन व अण्डों की गुणवता सभी घट जातें है। इसके लिये सबसे उपयुक्त तरीका है कि घास फूस के गट्ठर छत व दीवारों के सहारें लगा दिये जाऐं कमरें को सर्दी में गर्म व गर्मी में ठण्डा रखतें है अन्य इंतजाम भी किये जा सकतें है।
6-vknzrk& 	सूखा रखना चाहिए क्योंकि नमी में मुर्गीयॉ असहज महसूस करती है जैसे जुकाम, न्यूमोनिया, कुक्कुट शाला में नमी फर्श सें , छत से , दीवारों से , बरसात के पानी से या पीने के पानी के बर्तन से पैदा हो सकती है नमी पैदा होने से रोकना चाहिए।

7-i:dk'k& 	प्रकाश से मुर्गीयॉ अच्छा महसूस करती है व इनका उत्पादन भी बढता है। प्रकाश उपलब्धता से वे जल्दी परिपक्व होती है व अण्डे का उत्पादन भी शुरू हो जाता है। पूर्ति कृत्रिम प्रकाश द्वारा करनी चाहिए। बीमारी पैदा करने वाले जीवाणु भी नष्ट होते है साथ ही यह vit-D उत्पादन में भी सहायक होता है अण्डे उत्पादन करने वाली मुर्गियों के लिये पीला या सफेद प्रकाश काम में लेना चाहिए।

vkokl e: midj.k

फीडर (दाने के लिए)– 50 मुर्गी पर 2 ।

पानी हेतु बर्तन– 50 मुर्गी पर 2 ।

5- vkgkj

खाद्य सामाग्री चावल पालिस,मक्का, ज्वार, जौ, चना, मछली का चूरा, चूना पत्थर, नमक से मिश्रित आहार उचित मात्रा में देना । Grit को कैल्शियम की पूर्ति के लिये कंकर पत्थर व चुना पुरी मात्रा में उपलब्ध कराते है, जिससे अण्डों का सुविकसित हो। कंकर पत्थर रखने के लिये साधारण फिडर या अन्य कोई पात्र काम में ले सकते है।

vkgkj dh ek=k ¼vkn'k½	1 Ik{kh	5 Ik{kh	10 Ik{kh	50 Ik{kh	100 Ik{kh	200 Ik{kh
शुरूआती आहार प्रतिदिन (जन्म से 30 दिन तक)	50 ग्राम	250 ग्राम	500 ग्राम	2.5 kg.	5 kg.	10 kg.
अन्तिम आहार प्रतिदिन (31 से 60 दिन तक)	75 ग्राम	375 ग्राम	750 ग्राम	3.750 kg.	7.500 kg.	15 kg.
कूल आहार 90 दिनों के लिए जो व्यवस्था करनी चाहिए ।	6 ग्राम	30	60	300	600	1200

आदर्श आहार की मात्रा खुली चराई एवं घर में उपलब्ध सांग – सब्जी एवं छटे हुए बेकार अनाज से कि जा सकती हैं, भोजन कि कमी से मुर्गीयों में बीमारी बढ़ सकती है । एवं वे एक दूसरे पर हमला कर कमजोर पक्षियों को मार सकती हैं ।

6- Vhdkdj.k&

Vhdk	fnu	jkx dk y{.k
मार्किस रोग	1 दिन का चूजा	श्वास में तकलीफ, कलंगी में सूजन ।
रानीखेत रोग	7 वें दिन में	पक्षी सुस्त, पंख मुडे हुये, पंख पैरों मे लकवा, पीले हर दस्त, आखें बन्द ।
रानीखेत रोग	28 वें दिन	पक्षी सुस्त, पंख मुडे हुये, पंख पैरों मे लखवा, पीले हर दस्त, आखें बन्द ।
फाऊल पॉक्स	70 वें दिन	कंलगी, ऑख की पुतलिया, सरि पर फुन्सिया, ऑख से पानी ।

chekjh	Yk{k.k	b:ykt
cMZ ¶yw	खाना पानी बन्द,सिर कंलगी मे सूजन, नाक से स्त्राव ।	बचाव हेतू एक दिन के चूजे का टीकाकरण, बिछावन को सूखा रखे ।
jkuh[ksr	पंख मूडे हुये, पैरो मे लकवा,पिले–हरे रंग दस्त ।	ब्रायलर मे सात दिन मे रानी खेत रोग का टीकाकरण, बीमार पक्षी को अलग रखना ।
Qkmy ikDl	सिर, ऑख व कंलगी में फुन्सियॉ, ऑख से पानी का स्त्राव ।	लेयर में 8 सप्ताह की उम्र में टीकाकरण ।

7- Lkko/kkfu;k&

1. आवास की उचित साफ सफाई रखनी ।
2. दाना–पानी सन्तुलित ।
3. समय पर टीकाकरण ।
4. बिमार पक्षी को अलग कर देना ।
5. 7–8 मुर्गीयो के साथ नर मुर्गा रखे ।
6. बच्चे लेने वाले अण्डे 7 दिन से पुराने न हो ।
7. कुक्कुट शाला में घुसने से पहले पैर धोने की व्यवस्था होनी चाहिए ।

8- mRiknu%&

1 अण्डा देने की अवस्था 6 माह से 18 माह तक

2 8 से 12 सप्ताह मे ब्रायलर शरीर भार =1.5 kg मांस हेतू उपयोगी ।

9- fjdkMZ tks fd m/ke viukus ij j[kus pkfg, A

1. आय – व्यय का हिसाब ।
2. मुर्गीयों एवं मुर्गे का स्टॉफ रजिस्टर ।
3. बीमारियों के लक्षण जिसके मृत्यु का कारण पता चल सकें ।
4. दाने का प्रतिदिन हिसाब ।
5. वजन का रिकार्ड ।

vkHkkj

Ik;koj.k f'k{k.k dsUnz]vgenkckn